4

सामूहिक सौदेबाजी
(Collective Bargaining)

सामूहिक सौदेबाजी शब्दबंध का प्रयोग सर्वप्रथम सिडनी वेब्ब (Sidney Webb) ने 1891 ई. में किया। बाद में संयुक्त राज्य अमेरिका के 'अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर' (American Federation of Labour) के अध्यक्ष सैमुअल गौंपर्स (Samuel Gompers) ने इसे नियोजन की शर्तों एवं दशाओं के निर्धारण में अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण माना और उसके प्रयोग को व्यापक बनाने का प्रयास किया। धीरे धीरे, विश्व के कई देशों में औद्योगिक विवादों को सुलझाने तथा नियोजन की शर्तों एवं स्थितियों के निर्धारण में सामूहिक सौदेबाजी की भूमिका निरंतर महत्त्वपूर्ण होती गयी है।

अर्थ एवं परिभाषा
(Meaning and Definition)

'सामूहिक सौदेबाजी' शब्द दो शब्दों से मिल कर बना है—सामूहिक और सौदबाजी। सामूहिक का आशय किन्हीं व्यक्तियों विशेष के समूह से है, जबकि सौदेबाजी शब्द का अर्थ अनुबंध करना है। इस प्रकार दोनों शब्दों का तात्पर्य व्यक्तियों के समूह द्वारा कोई अनुबंध करना है।

इस प्रकार "सामूहिक सौदेबाजी वह प्रक्रिया है जिसमें सेवायोजक या सेवायोजकों का संघ तथा कर्मचारियों का संघ आपसी विचार-विमर्श एवं वाद-विवाद द्वारा सेवा की शर्तों तथा कार्य की दशाओं के संबंध में अनुबंध करते हैं।"

विभिन्न विद्वानों, विशेषज्ञों एवं संगठनों ने सामूहिक सौदेबाजी को विभिन्न ढंगों से परिभाषित किया है। कुछ प्रमुख परिभाषाएं निम्नलिखित हैं :

1. **रिचर्डसन** (Richardson) के अनुसार, "सामूहिक सौदेबाजी तब उत्पन्न होती है जब कई श्रमिक मिलकर नियोक्ता या नियोक्ताओं के समूह के साथ सामूहिक रूप से सौदाकारी इकाई के रूप में श्रमिकों के रोजगार की दशाओं के संबंध में समझौता करने के उद्देश्य से विचार-विनिमय करते हैं।"[1]

---

1. "Collective Bargaining takes place when a number of workers go into negotiation as a bargaining unit with an employer or group of employers with the object of reaching an agreement on conditions of employment for the work-people concerned." —J.H. Richardson An Introduction to the Study of Industrial Relations. p. 229

Scanned with CamScanner

2. **एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशियल साइंसेज** (Encyclopaedia of Social Sciences) के अनुसार, "यह दो पक्षों के मध्य वाद-विवाद तथा विचार-विनिमय की एक प्रक्रिया है जिनके एक अथवा दोनों व्यक्तियों के समूह एक संस्था में कार्य करते हैं। सौदेबाजी का परिणाम उन शर्तों या कार्य दशाओं का निर्धारण है जिनके अंतर्गत आगे की सेवाएं करनी हैं। विशेष रूप से सामूहिक सौदबाजी वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा नियोक्ता या नियोक्ताओं व कर्मचारियों का समूह कार्य की दशाओं से संबंधित समझौता करते हैं।"[1]

3. **जूसियस** (Jucius) के अनुसार, "सामूहिक सौदेबाजी का आशय उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा एक ओर सेवायोजक तथा दूसरी ओर कर्मचारियों के प्रतिनिधि उन दशाओं—जिनके अंतर्गत वे कार्य करेंगे तथा उनकी सेवाओं के लिए पारिश्रमिक दिया जायेगा—के लिए ठहरावों पर पहुंचने का प्रयास करते हैं।"[2]

4. **फ्लिप्पो** (Flippo) के अनुसार, "सामूहिक सौदेबाजी का आशय उस प्रक्रिया से है जिसके अंतर्गत श्रम संगठनों के प्रतिनिधि तथा व्यावसायिक संगठन के प्रतिनिधि मिलते हैं तथा एक समझौता या अनुबंध करने का प्रयास करते हैं जो कर्मचारियों एवं सेवायोजक संघ के संबंधों की प्रकृति का निर्धारण करता है।"[3]

5. **अग्निहोत्री** (Agnihotri) के शब्दों में, "सामूहिक सौदेबाजी कर्मचारियों तथा सेवायोजकों की आवश्यकताओं एवं उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एक तकनीक है जो कि औद्योगिक समाज का अभिन्न अंग है। वास्तव में उद्योग में यह प्रजातंत्र के सिद्धांतों एवं व्यवहारों का विस्तार है। यह एक गतिशील प्रक्रिया है जो निरंतर विस्तृत होती जा रही है।"[4]

6. **फ्रेड विटने** (Fred Witney) के अनुसार, "सामूहिक सौदेबाजी सेवा की शर्तों के संयुक्त निर्धारण का एक साधन है।"[5]

7. **नेशनल एसोसिएशन ऑफ मैन्युफैक्चरर्स** (National Association of Manufacturers) के अनुसार सरलतम परिभाषा के रूप में, "सामूहिक सौदेबाजी प्रक्रिया एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा प्रबंधक एवं श्रमिक एक-दूसरे की समस्याओं को एवं विचारों को सामने ला सकते हैं तथा सेवा संबंधों की रूपरेखा का विकास करते हैं जिसके अंतर्गत दोनों पक्षकार पारस्परिक सहयोग तथा लाभ भावना से कार्य करते हैं।"[6]

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि **"सामूहिक सौदेबाजी श्रमिकों तथा नियोक्ता के संगठित दलों या प्रतिनिधियों के माध्यम से सेवा कि संपूर्ण शर्तों के संबंध में सामूहिक विचार-विमर्श द्वारा कोई सौदा या समझौता करने की क्रिया का नाम है।"**

---

1. "A process of discussion and negotiation between two parties one or both of whom is a group of persons acting in a concern. The resulting bargain is an understanding as to terms and conditions under which a continuing service is to be performed. More specially, collective bargaining is the procedure by which an employer or employers and a group of employers agree upon the conditions of work." —Encyclopaedia of Social Sciences
2. "Collective bargaining refers to the process by which employers on the one hand, and the representatives of employees on the other, attempt to arrive at agreements covering the conditions under which eimployees will contribute and be compensated for their services." —Micheal J. Jucius
3. "Collective bargaining is a process in which the representatives of a labour organisation and the representatives of the business organisation meet and attempt to negotiate a contract or agreement, which specify the nature of employee-employer union relationship." —Edwin B. Flippo
4. "Collective bargaining is a technique for the fulfilment of the needs and objectives of workers and employers, as an integral part of an industrial society. It is, in fact, an extension of the principles and the practice of democracy to industry. It is a dynamic process and is constantly expanding." —Agnihotri
5. "Collective bargaining is a means of joint determination of terms of employement." —Fred Witney
6. "In its simplest definition the process of collective bargaining is a method by which management and labour may explore each other's problems and view-point and develop a framework of employment relations with in which both may carry on their daily association in a spirit of cooperative goodwill and for their mutual benefit." —Industrial Relations Deptt. of National Association of the Manufacturers

Scanned with CamScanner

सामूहिक सौदबाजी की विशेषताएं एवं प्रकृति
(Charictristics and Nature of Collective Bargaining)

सामूहिक सौदेबाजी की प्रकृति की निम्न विशेषताएं हैं :

1. सामूहिक क्रिया (Joint function) : यह एक सामूहिक क्रिया है जिसमें श्रमिकों और प्रबंधक तथा सेवायोजकों के प्रतिनिधि आपसी तौर पर हिस्सा लेते हैं।

2. गतिशील प्रक्रिया (Dynamic process) : सामूहिक सौदेबाजी एक गतिशील प्रक्रिया है अर्थात् यह प्रक्रिया सदैव चलती रहती है, चूंकि संस्था में प्रतिदिन नयी नयी समस्याएं खड़ी होती रहती हैं। अत: उन सबके समाधान के लिए यह प्रक्रिया सदैव चलती रहती है।

3. द्विपक्षीय (Bypartite) : यह एक द्विपक्षीय क्रिया है, जिसमें श्रमिकों और प्रबंधकों के प्रतिनिधियों के बीच साफ तौर से और आमने-सामने बातचीत का मौका मिलता है।

4. जनतंत्र (Democratic) : सामूहिक सौदेबाजी से व्यावहारिक रूप से औद्योगिक जनतंत्र कायम होता है।

सामूहिक सौदेबाजी की विशेषताएं व प्रकृति

1. सामूहिक क्रिया
2. गतिशील क्रिया
3. द्विपक्षीय
4. जनतंत्र
5. अंतर अनुशासन
6. लोचदार
7. गतिविधियां
8. व्यापार अनुबंध
9. बाह्य हस्तक्षेप
10. व्यापारिक लाभ
11. प्रतिकूल हितों में समन्वय

5. अंतर अनुशासन (Inter-discipline) : यह अंतर अनुशासन पद्धति का एक अच्छा रूप है यह एक स्वशासन है जो औद्योगिक संस्थाओं में पाया जाता है।

6. लोचदार (Flexible) : यह एक लोचदार और गतिशील क्रिया है जिसमें कोई पक्ष ज्यादा कठोर रुख नहीं अपना सकता और सौदेबाजी के समय यह गुंजाइश बराबर रहती है कि कब परिस्थिति बदल जाये और अंतिम रूप से निर्णय कुछ भी हो जाये।

7. गतिविधियां (Activities) : सामूहिक सौदेबाजी की प्रक्रिया में अनेक गतिविधियों को सम्मिलित किया जाता है। फिलप्पो (Flippo) के अनुसार, "सौदेबाजी सम्मिलित होने, मांग प्रस्तुत करने, विचार-विमर्श करने, प्रति प्रस्ताव करने, मोल भाव करने, फुसलाने, धमकाने एवं अनेक गतिविधियों की प्रक्रिया है।"

8. व्यापार अनुबंध (Trade contract) : इस प्रकार सामूहिक सौदेबाजी की प्रक्रिया का परिणाम श्रम अनुबंध नहीं बल्कि एक व्यापार अनुबंध है। यह अनुबंध सेवायोजकों पर इस प्रकार का दायित्व डालता है कि वे कार्य को स्वीकार करें यह उन शर्तों के विवरण से अधिक नहीं है, जिस पर कि कार्य प्रस्तावित व स्वीकृत किया जाना है और कार्य संपन्न किया जाना है।

9. बाह्य हस्तक्षेप (External interference) : सामूहिक सौदेबाजी में विवाद के पक्षकारों के बीच सामूहिक विचार-विमर्श होता है इसमें किसी तृतीय पक्षकार का हस्तक्षेप नहीं हो पाता है।

10. पारस्परिक लाभ (Mutual benefits) : सामूहिक सौदेबाजी दोनों पक्षकारों के पारस्परिक सहयोग, प्रतिष्ठा एवं लाभ की वृद्धि की दृष्टि से की जाती है इसमें कर्मचारियों एवं श्रमिकों के हितों की रक्षा होती है तथा उद्योग में शांति बनी रहती है।

11. प्रतिकूल हितों में समन्वय (Reconcialaction between confliting interests) : सामूहिक सौदेबाजी का एक महत्त्वपूर्ण लक्षण यह है कि यह दो परस्पर विरोधी पक्षकारों के हितों में समन्वय स्थापित करने की प्रक्रिया है। हरबिंसन (Harbinson) ने उचित ही कहा है कि "सामूहिक सौदेबाजी दो सामान्य एवं परस्पर प्रतिकूल हित रखने वाले पक्षकारों के बीच स्वत: समन्वय की प्रक्रिया है।"

सामूहिक सौदेबाजी का क्षेत्र
(Scope of Collective Bargaining)

सामूहिक सौदेबाजी का क्षेत्र विस्तृत है। इसमें कई बातों को सम्मिलित किया जाता है। सामान्यत: निम्न प्रमुख मामलों पर सामूहिक सौदेबाजी की जाती है :

Scanned with CamScanner